चलते चलते

आठ भावपूर्ण कविताएँ

अनिल चावला

www.samarthbharat.com

चलते चलते शाम हो गयी

हम बस यूँ ही चलते रहे, मंजिल का कुछ पता नहीं।
चप्पल छेददार हो गयी, चलते चलते शाम हो गयी।।

गुज़रे पथ के काँटे भूल गये, छालों का कोई ग़म नहीं।
मेरी आशा कहाँ खो गयी, चलते चलते शाम हो गयी।।

हमसफ़र छूटते चले गये, लुटते रहे पिटते भी रहे।
रोने की फुरसत भी न रही, चलते चलते शाम हो गयी।।

थकान तो फ़ितरत में नहीं, आराम भी आदत में नहीं।
ठहरने की इच्छा भी नहीं, चलते चलते शाम हो गयी।।

जाम-ओ-मीना तलब नहीं, रंगीनियों का आशिक़ नहीं।
मेरे हौंसले कम भी नहीं, चलते चलते शाम हो गयी।।

अंधेरे से तो हम डरते नहीं, दिल में सूरज डूबा नहीं।
फिर यार घबरायें क्यों कि, चलते चलते शाम हो गयी।।

तन में चलने का दम रहे, मन में जोश औ जुनून रहे।
आप का साथ हो ग़म नहीं कि, चलते चलते शाम हो गयी।।

२ जनवरी २०१७

 Copyright – All rights Free

चलते चलते वो छूट गया

हमारा मिलन इत्तफ़ाक था, वह पल याद आ गया ।
हम जो मिल कर हँसे रोये, याद कर नम हो गया।।

सामने की बेंच पर हमने, बहुत तूफ़ान किया।
बचपन का वो हर एक लम्हा, आँखों में नाच गया।।

कब कहाँ सहारा दे उसने, मुझको संभाल लिया।
याद करना तो संभव नहीं, अश्कों में बहा दिया।।

मैंने सीखा दोस्तों से बहुत, यार दामन भर गया।
कैसे उस का शुक्रिया करूँ, वो यार तो खो गया।

साथ गाते थे नाचते थे, वो समय गुम हो गया।
जिंदगी ने मुझे बहुत दिया, कुछ-न-कुछ तो खो गया।।

ऐसा नहीं कि वो ही बदला, बदल मैं भी तो गया।
उलझनों ने कहकहे छीने, दिल भी दूर हो गया।।

वो जो मेरे दिल के करीब था, मत कहना कि खो गया।
चलते चलते वो छूट गया, पर दिल में पैठ गया।।

९ जनवरी २०१७

 Copyright – All rights Free

चलते चलते देखा दिखाया

आज जब हर ओर एक अंधी दौड़ दिखाई दे रही है, मैं प्रेम के ढाई आखर की बात कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि प्रेम की इस कविता को आप, सुधी जनों, का आशीर्वाद मिलेगा।

जीवन पथ पर चलते चलते, बस इधर उधर देखा।
कभी साथ के मुसाफिरों को, कभी घरों को देखा।।

उसकी झोली के कतरे पर, तो दिलो दिमाग रखा।
अपने दामन के लालों पर, बस उपेक्षा भाव रखा।।

यह मिले वह भी नहीं छूटे, सदा यही सोच रखा।
अनंत चाहतों ने भगाया, मुझे परेशान रखा।।

अमृत कलश मेरे भाग था, मैंने उसे ना चखा।
आगे निकलने की दौड़ में, ना कुछ भोगा न चखा।।

किताबें खूब बाँची मैंने, प्रेम करना न सीखा।
सदा तोल मोल करता रहा, डूब जाना न सीखा।।

मकान मशीन तो जोड़े पर, रिश्ते बचा ना सका।
मैं को किया बुलंद इतना कि, किसी का हो ना सका।।

चलते चलते सोचता हूँ कि, ना जाने क्या देखा।
और न जाने क्या दिखाया, क्यूँ खुद को न देखा।।

 Copyright – All rights Free

वो जो हाथों से हाथ छूटा, मैनें क्यों न देखा।

मैं जो खुद से फिसलता गया, वह क्यों नहीं देखा।।

दिखाने में इतना डूबा कि, अपनों को ना देखा।

इधर उधर तो बहुत झाँका, अपना घर ना देखा।।

१६ जनवरी २०१७

 Copyright – All rights Free

हमसफ़र

चलते चलते श्रृंखला की चौथी कविता एक प्रेम कहानी है। इस लंबी कविता में विरह, मिलन और उसके बाद पुनः विरह है। कल्पना पर आधारित इस प्रेम कथा में यदि आपको अपने जीवन के कुछ लम्हे याद आ जाएँ तो मैं अपने प्रयास को सार्थक समझूँगा।

दूर तलक मेरे साथ चले, किसी मोड़ छूट गए।
मुड़ कर देखा भी था तुम्हें, तुम बस कहीं खो गए।।

ना तुम खफा ना मैं नाराज, बस दूर होते गए।
नज़र से तो तुम ओझल हुए, पर दिल से नहीं गए।।

चलते चलते सोचता रहा, कि अलग क्यों हो गए।
कोई जवाब तो मिला नहीं, सिर्फ आँसू आ गए।।

वक्त के तूफान तुम्हारी, याद को भी ढक गए।
तुम अपनी राह चलते रहे, शायद तुम भूल गए।।

जिंदगी की रेलमपेल में, हम कब कहाँ खो गए।
जो दिल में हर पल रहता था, क्या उसे भूल गए।।

फिर अचानक न जाने कैसे, तुम सामने आ गए।
क्या कहूँ समझ नहीं आया, एहसास भी थम गए।।

उस क्षण ना खुशी थी ना गम, दिल दिमाग जम से गए।
एक बार सोचा गिला करूँ, नम नयन लब सी गए।।

 Copyright – All rights Free

जब कुछ संभले तो देखा कि, हम कितना बदल गए।

चेहरा-औ-मुस्कान तो वही, माएने बदल गए।।

हमारे रास्ते जो जुदा हुए, उसूल भी वो न रहे।

अब भी दीवाना करते हो, पर तुम मेरे न रहे।।

इश्क तो बस हुस्न की पूजा, वो दौर गुजर चले।

मेरा दिल ढूँढता है उसे, जो हमसफर बन चले।।

शुक्रिया यार फिर मिलने का, बस यह कह चलो चलें।

याद तुम बहुत आओगे पर, फिर से भूलने चलें।।

२० जनवरी २०१७

 Copyright – All rights Free

रूकूँ या चलूँ

यह कविता मेरे अपनों के लिए है। संसार की समस्त सुंदरताएँ, आनंद और मज़े मैं उन पर निछावर करता हूँ जो मुझे प्रेम करते हैं, जो मेरे अपने हैं। उनके लिए जीवन समर्पित करने में जो आनंद है वो अन्यत्र कहाँ?

खूबसूरत दिलकश नज़ारे, देखता रहूँ कि चलूँ ।
बहती नदी को निगाहों से, चूमता रहूँ कि चलूँ ।।

मनोरम पर्वत बुलाते हैं, कदम थाम लूँ कि चलूँ ।
शोर करते झरनों की ओर, पग मोड़ लूँ कि चलूँ ।।

शहर के चमचमाते भवनों, की रोशनी में रहूँ ।
या कम्प्यूटर के सामने, काम ही करता रहूँ ।।

कामना का असीम आकाश, उड़ूँ तो कितना उड़ूँ ।
अनंत इच्छाओं के समुद्र, इन पार कैसे उड़ूँ ।।

प्रत्येक सुन्दर दृश्य मुझे, एकाकी करे क्यूँ ।
हर मस्तानी शाम के बाद, और अन्धेरा क्यूँ ।।

जिंदगी के तूफ़ां से नहीं, अकेलेपन से डरूँ ।
जीना हो परिवार के बिना, मैं इस सोच से डरूँ ।।

मुझ पर उनका भी कुछ हक है, जिनको मैं याद करूँ ।
रिश्तों एहसानों से बँधा, कैसे जो चाहे करूँ ।।

 Copyright – All rights Free

जो नयन मेरी राह देखें, वो नम तो नहीं करूँ ।
जिन्हें मुझसे आशा उनको, निराश तो नहीं करूँ ।।

थकता हूँ तो सोचता हूँ कि, मैं क्यूँ चलता रहूँ ।
थकन मिटे प्यार दुलार से, तो क्यूँ न चलता रहूँ ।।

उम्र के हर पड़ाव को छोड़, अथक बढ़ता ही चलूँ ।
अपनों के प्रेम के सहारे, काम करता ही चलूँ ।।

जो भी मुझ पर भरोसा करे, उसका सहारा बनूँ ।
कभी अपनों का दिल तोड़ दूँ, ना यूँ अभागा बनूँ ।।

५ फरवरी २०१७

 Copyright – All rights Free

पुराने मित्र के नाम एक पत्र

यह कविता एक ऐसे मित्र को संबोधित है जो सफलता की सीढ़ियां चढ़ते हुए बहुत आगे निकल गया है।

कभी हम साथ चले थे, अब बस अजनबी हैं।
मिल कर सुख दुःख भोगे, अब भी वो याद हैं।।

तुम आगे बढ़ते गए, मैं पीछे रह गया।
अब तुम इक सितारा हो, जो हमें भूल गया।।

तुम्हारे भूलने से, मुझे शिकायत नहीं।
दोस्ती खत्म होने का, यार गिला भी नहीं।।

तुम्हें शिखर पर देख, बहुत खुश होता हूँ।
शायद तुम भी खुश होगे, बस यह सोचता हूँ।।

हाँ बस इतना बता दूँ, कि मैं मजे में हूँ।
जिंदगी के हर रस का, आनंद लेता हूँ।।

तुम्हारी गति और चाल, तुम्हें मुबारक हो।
क्या खोया क्या पाया, तुम ही जानते हो।।

जीवन को उपलब्धि के, चश्मे से नापना।
मैंनें ना कभी सीखा, ना ही कभी जाना।।

 Copyright – All rights Free

संबंधों को निभाना, आदर्शों को जीना।

बेमानी समझते हो, तुम प्रेम में मरना।।

मुझे मूर्ख कहते हो, हाँ तो कहते रहो।

दुआ कि मैं जैसा खुश हूँ, तुम भी वैसे रहो।।

२६ फरवरी २०१७

 Copyright – All rights Free

पिछले जन्म का रिश्ता

बसंत ऋतु है। फाल्गुन का महीना है। इस मौसम में प्रेम गीत गाना और सुनाना अलग ही आनन्द देता है। चलते चलते श्रृंखला की सातवीं प्रस्तुति एक प्रेम गीत है। इसे मैंने लिखा है पर अब यह पूरी तरह आपका है। इसे पूरे प्रेम से अपनी / अपने प्रेमिका / प्रेमी, पत्नी / पति को सुनाएं तथा इस मदमस्त मौसम का आनंद उठायें। यह गीत प्रेम की हिन्दू अवधारणा पर आधारित है। आप यदि चाहें तो इस गीत में सीता राम को भी देख सकते हैं, राधा कृष्ण को भी और स्वयं को भी।

पिछले जन्म का रिश्ता, जरूर रहा होगा।
हमारा मिलन अकारण, तो ना हुआ होगा।।

अलग अलग सफर में गुम, हम दो अजनबी थे।
अब दिल यह सोचता है, क्या हम अजनबी थे।।

हमने हाथ थामा तो, तन-मन-धन जुड़ गया।
ना कुछ सोचा न समझा, प्यार बढ़ता गया।।

राह आसान तो न थी, पर हम चलते रहे।
कठिनाईयाँ बहुत थीं, तुम संभाले रहे।।

अभाव पीड़ा अपमान, हमने साथ झेला।
पर प्रिय मुझे तो तुमने, अकेले ही झेला।।

सपने जुनून आदर्श, मेरे सहे तुमने।
यह आग का दरिया था, हँस कर सहा तुमने।।

 Copyright – All rights Free

कई बार सोचता हूँ, कि क्यों चलते रहे।
तुम तब भी मेरे साथ, जब सब थे छोड़ रहे।।

मुझमें घमंड न भर दे, यह साथ तुम्हारा।
निश्छल असीम शाश्वत, विश्वास तुम्हारा।।

चलते चलते एक दिन, तन छूट जाएगा।
चलेंगें अनंत पथ पर, जग छूट जाएगा।।

पिछले जन्म का रिश्ता, ना छूट पाएगा।
तन जलेगा पर बंधन, ना टूट पाएगा।।

५ मार्च २०१७

 Copyright – All rights Free

होली पर चुटकी भर गुलाल

समस्त मित्रों को होली की शुभकामनाएँ। होली सम्बन्धों का, रिश्तों का, धर्म का, प्रेम का उत्सव है। जहाँ सम्बन्ध होते हैं वहाँ कुछ शरारत भी होती है। मर्यादा में रहते हुए की गयी मस्ती और छेड़खानी रिश्तों में मधुरता घोल देती है। चलते चलते श्रृंखला की आठवीं कविता होली के भावों में डूबी है। किसी भी पुरुष के लिए अपनी पड़ोसन, सहकर्मिणी, भाभी, ननद, बहन, साली, मौसी, चाची, बुआ इत्यादि के साथ मस्ती भरी पर मर्यादित होली खेलने का जो आनंद है वो वही जानता है जिसने इसे अनुभव किया है। इसी प्रकार स्त्री के लिए पड़ोसी, सहकर्मी, देवर, भाई, मौसा, फूफा, चाचा, जीजा आदि के साथ होली खेलने का आनंद है। आशा है आपने इस बरस इस आनंद को भोगा होगा। शुभकामना है कि आप हर वर्ष होली के अवसर पर इस आनंद का अनुभव करें।

लगा चुटकी भर गुलाल, तेरे चेहरे पर।
मैं हँसा तू हँसी बस, यह हुआ होली पर।।

मोहक मुस्कान तेरी, जादू करे मुझ पर।
पास से देखा मैंने, इस बार होली पर।।

अलग तुम्हारी राहें, अलग मेरा सफ़र।
फिर भी कुछ पल जुड़े हम, मस्त हो होली पर।।

 Copyright – All rights Free

कश्मकशे-जिंदगी से, कुछ वक्त निकाल कर।
निर्मल आनंद पाया, इस मदिर होली पर।।

कल फिर चलेंगें हम तुम, अपनी अपनी डगर।
पर कुछ रिश्ते बन गए, इस धर्म उत्सव पर।।

मिलना बिछड़ना मैंनें, छोड़ दिया भाग पर।
कल क्या होगा यह तो, न सोचा होली पर।।

हाँ मन में आशा है कि, यूँ ही मिलोगी फिर।
लगा चुटकी भर गुलाल, हर बरस होली पर।।

१३ मार्च २०१७

 Copyright – All rights Free

कवि परिचय

नाम अनिल चावला

जन्म २५ जुलाई १९५९, दिल्ली

शिक्षा बी० टेक० (मेकैनिकल इन्जीनिरिंग), आई० आई० टी०, मुम्बई; एल० एल० बी०

व्यवसाय विधि सलाहकार

निवास भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

ईमेल samarthbharatparty@gmail.com

 Copyright – All rights Free